Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
Available online at : **www.gisrrj.com**
OPEN ACCESS
© 2024 GISRRJ | Volume 7 | Issue 3 | ISSN : 2582-0095

युवा वर्ग में बढ़ते नशे के प्रवृत्ति का एक समाज वैज्ञानिक अध्ययन

प्रमोद कुमार सिंह
शोधार्थी (एम.फिल.–समाजशास्त्र)
ठा.रणमत सिंह शासकीय महाविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश

Article Info
Article History
Accepted : 01 May 2024
Published : 15 May 2024
Publication Issue :
Volume 7, Issue 3
May-June-2024
Page Number : 01-12

सारांश–समाज के बदलते परिवेश में कुछ अलग करने की कामना, मानसिक तनाव और बहुत से शौक ऐसे कारण है जो नशे के प्रचलन को बढ़ा रहे हैं। इसका शिकार हमारी युवा पीढ़ी हो रही है। नशा करना युवाओं के लिए एक फैशन की तरह है जो प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है। राष्ट्रीय अपराध रिकार्ड ब्यूरो की रिपोर्ट से यह पता चलता है कि भारत में चार लाख लोग कई तरह के नशे करते हैं। संयुक्त राष्ट्र की रिपोर्ट के अनुसार पूरे विश्व में दो लाख से ज्यादा लोग नशा करने की वजह से मर जाते हैं। बेरोजगारी भी नशे का बहुत बड़ा कारण है। इतनी ज्यादा जनसंख्या होने के कारण भारत में बेरोजगार युवा निराश होकर नशा करने लग जाते हैं जिसके कारण वह अपने घरों में पैसे चुराकर भी नशा करते है। इससे उन युवाओं के परिवारों को परेशानियों का सामना करना पड़ता है। व्यापारी नशीले पदार्थ बेचते हैं और इन मासूमों की जिंदगी के साथ खिलवाड़ करते है। परिणामस्वरूप नशे की लत में डूबे हुए लोगों के परिवारों को बहुत कुछ खोना पड़ता है। साथ ही साथ देश का भी नुकसान होता है। जिस वक्त युवाओं की पढ़ने की उम्र होती है, वह नशे की वजह से अपनी जिंदगी तबाह कर रहे होते हैं। नशा एक लत के साथ–साथ व्यापार का केन्द्र भी बनता जा रहा है। नशे की रोकथाम के प्रति सरकार का लापरवाह रवैया इसके चलन को बढ़ा रहा है। शराब की बोतल और सिगरेट की डिब्बी पर एक तरफ दी गई छोटी सी चेतावनी–''शराब या सिगरेट पीना सेहत के लिए हानिकारक है'' सिर्फ एक औपचारिकता भर रह गई है। इसका एक कारण यह भी हो सकता है कि सरकार को इससे अधिकतम लाभ प्राप्त हो रहा है। नशे के प्रति लोगों को जागरुक करना पड़ेगा, जिससे लोग इसे इस्तेमाल न करें। इस पर रोक लगने के बाद ही भारत आगे बढ़ पाएगा।

मुख्य शब्द : मानसिक तनाव, बेरोजगारी, फैशन, शराब एवं सिगरेट।

प्रस्तावना– किसी भी राष्ट्र की वास्तविक शक्ति वहां के युवक ही होते हैं। युवा वर्ग ही क्रांति लाता है। युवा वर्ग ही अपनी उत्साह, उमंग और ऊर्जा से राष्ट्र के इतिहास की धारा को नया मोड़ देते हैं। वे ही राष्ट्र के

Copyright © 2024 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution **4.0 International License (CC BY-NC 4.0)**

निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। महात्मा गांधी के अनुसार युवक ही राष्ट्रीय व्यंजन में नमक हैं। युवा वर्ग का अर्थ उन विद्यार्थियों से लिया गया है जो स्कूलों, कालेजों और विश्वविद्यालयों में विभिन्न विषयों की शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। यह एक निखरा हुआ सत्य है कि यही भविष्य के कर्णधार हैं। उन्हें ही स्कूल और विश्वविद्यालयों से निकलकर देश और राष्ट्रीय जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में प्रवेश करके उन्हें संभावना, सजाना–संवारना और विकसित करते हुए उन्नति के चरम शिखर तक पहुंचाना है। विद्यार्थी जीवन यानी युवावर्ग काल उनके जीवनकाल का शुभारंभ माना जाता है। क्योंकि यह निर्माण का, सर्जन का काल माना जाता है। इस उम्र में उन्हें हमेशा सजगता से काम लेना चाहिए ताकि भविष्य में जो भी उत्तरदायित्व उनके कंधों पर आए उन्हें वे सब ढंग से निभा सकें मगर आज का युवावर्ग तो मानो इन बातों से सौ कोस दूर है। आधुनिक युग में नशा युवावर्ग के लिए एक फैशन बन चुका है और युवावर्ग और नशे का चोली दामन जैसा साथ हो गया है। युवा वर्ग और नशे के पारस्परिक संबंध ने वर्षों से जनमानस को उद्वेलित और आंदोलित कर रखा है। इस प्रश्न की व्यापकता इतनी सीमाहीन हो गई है कि आज हर क्षेत्र में यह संबंध चर्चा का विषय बना हुआ है। यह बड़ी विडंबना की बात है कि हमारी सभ्यता जितनी आगे बढ़ी है नशाखोरी और अपराध की घटनाएं भी उतनी ही तेजी से आगे बढ़ी हैं। हिंसा, बलात्कार, चोरी, आत्महत्या आदि अनेक अपराधों के पीछे नशा एक बहुत बड़ी वजह है।

आदिकाल से ही मद्यपान और नशीले पदार्थों के साधन मसलन अफीम, गांजा, चरस, भांग आदि हमारे समाज में प्रचलन में रहे है, इनके साथ ही साथ चिकित्सा जगत के विकास ने हमारे समाज को नशीली औषधियों को भी उपहार स्वरूप प्रदान किया है। व्यक्तियों के लिए जीवनदायी औषधियों के अत्यधिक सेवन से सारा विश्व जूझ रहा है। विश्व के साथ ही साथ भारतीय महानगरों, कस्बों और गाँवों में नशीले पदार्थों का सेवन हमारे समाज के लिए युद्ध की विभीषिका से भी कई गुना अधिक खतरनाक है। वर्तमान युवा पीढ़ी दिशा निर्देशन के अभाव में प्रतिपल, लक्ष्यविहीन हो रही है। अभी तक अधिकतर ज्ञान इस बात के लिए जिसके द्वारा इन पर नियंत्रण करने में सफलता प्राप्त की जा सके पर्याप्त नहीं है जिससे कि ऐसी कोई योजना बनाई जा सके तथा इनसे बचा जा सके। अतः आवश्यकता है किसी ऐसे शैक्षणिक कार्य की जिससे युवकों में इन नशीले पदार्थों के प्रयोग से रोका जा सके। आज नशीले पदार्थों का सेवन सम्पूर्ण विश्व में समस्त आयु वर्ग के नागरिकों द्वारा किये जाने का प्रचलन देखने को मिलता है। संदर्भित अध्ययन विषय ''युवा वर्ग में बढ़ते नशे के प्रवृत्ति का एक समाज वैज्ञानिक अध्ययन'', भभारतीय जनसंख्या में 40 प्रतिशत युवाओं की हिस्सेदारी को दृष्टिगत रखते हुए किया गया है। समाजशास्त्रीय दृष्टि से युवा जिनके कंधों पर राष्ट्र का बोझ है, का तात्पर्य उन आयु वर्ग के युवक–युवतियों से हैं जो भारतीय संविधान के अनुसार 18 से 35 वर्ष के आयु वर्ग अन्तराल में आते हैं। उन युवाओं में विवाहित, अविवाहित युवक–युवतियां भी सम्मिलित है जिनकी आयु 21 से 35 वर्ष के मध्य है। जब हम युवा की बात करते हैं तब हम भविष्य की बात करते हैं अर्थात् युवा ही किसी समाज या देश का भविष्य होता है। भारतीय युवाओं ने इतिहास के हर कालखण्ड को अपना महानतम योगदान दिया है।

आजादी के बाद कुछ वर्षों तक तो हमने अपनी सोच को सामाजिक सोच का केन्द्र बिन्दु बनाये रखा परन्तु धीरे–धीरे हमारी सोच में विकृति पनपने लगी समाज के प्रति हमारी सोच बदलने लगी। 1970 के दशक के बाद भारतीय जनसंख्या में युवाओं की वृद्धि में चौकाने वाले परिणाम सामने आये। 1901 में भारतीय युवाओं की जनसंख्या जहां 4 करोड़ थी, वहीं 1981 तक 12 करोड़ के ऊपर हो गयी। सन् 1991 की जनसंख्या में युवाओं की संख्या 15 करोड़ से ज्यादा रही है। वही सन् 2025 तक युवाओं की जनसंख्या 50 करोड़ से भी

ऊपर हो जायेगी। जो किसी विकसित राष्ट्र की जनसंख्या से ज्यादा है। भारतीय जनसंख्या में युवाओं की बढ़ती वृद्धि ने देश के सामने कई चुनौतियाँ उत्पन्न कर दी है। रोजगार के साधन सीमित होने के कारण भारतीय युवा अपनी ऊर्जा का सही इस्तेमाल नहीं कर पा रहा है। हताश और कुण्ठित युवा आज अनिश्चितता और बेरोजगारी की ओर अग्रसर हो रहा है, जिससे युवाओं के जीवन का अवमूल्यन होने लगा। भारतीय समाज निरन्तर बदलाव की प्रक्रिया में है। इस बदलाव की प्रक्रिया ने कई परिस्थितियों को जन्म दिया है। परिवार के स्वरूप और कार्यशैली में बदलाव के कारण पारिवारिक रिश्तों में दरार आयी, युवाओं पर परिवार नियन्त्रण धीरे–धीरे असन्तुलित होता गया, स्वतन्त्रता में खुलापन आने के कारण युवाओं के मूल्यों, प्रथाओं, परम्पराओं में भी परिवर्तन आया है। व्यक्ति जब अपनी दैनिक समस्याओं को सुलझाने में व्यक्तिगत और पारिवारिक स्तर पर प्रयास खोजने में असफल हो जाता है, तो वह नषे की ओर आकर्षित होता है। व्यक्ति को नशे की तरफ प्रेरित (आकर्षित) करने के पीछे मित्र समूह का दबाव, माता–पिता का गरीब होना, परिवार तथा समाज के प्रति विद्रोह, तिरस्कार की भावना, वर्तमान से पलायन और राजमर्रा के तनाव से मुक्ति पाने की इच्छा का योगदान है।[1]

नशीले पदार्थ के रूप में प्रयोग किये जाने वाले पदार्थों को निम्न श्रेणियों में बांटा जा सकता है–

1. **निकोटीन:**– इसके अन्तर्गत सिगरेट, सिगार, स्नफ एवं तम्बाकू शामिल किये गये हैं।
2. **शराब–** एल्कोहल कई प्रकार का होता है परन्तु वह एल्कोहल जिसके सेवन से शरीर तंत्र असाधारण क्रियाओं की तरफ उन्मुक्त होता है उसे इथाइल एल्कोहल कहते है।
3. **शामक या शांतिदायक पदार्थ–** केन्द्रीय स्नायु तंत्र को राहत दिलाने, दिमागी, उदासीनता मिटाने व गहरी नींद लाने के लिए प्रयोग किया जाता है।
4. **उत्तेजक औषधियाँ–** इसके अन्तर्गत चाय, काफी, कोका, पेप्सी जैसे पेय पदार्थ आनन्द एवं मस्ती के लिए प्रयोग किये जाने मंद उत्तेजक पेय पदार्थ आते है।
5. **स्वापक औषधियाँ–** इसको तीन भागों में विभाजित किया गयादृ
   ;प्द्ध अफीम, मार्फीन, हेराइन, स्मैक या ब्राउन शुगर, कोडीन आदि।
   ;प्प्द्ध संश्लेषित उत्पाद में पेथेडीन, मैथाडोन आदि।
   ;प्प्प्द्ध स. कैनाक्सि में गांजा, भांग, चरस (हशीश), कोकीन आदि।
6. **भ्रमित करने वाले पदार्थ–** इसके अन्तर्गत एल.एस.डी., मारिजुआरा, स्टेरायड्स, मेथमफेटामाइन, रोहपनॉल, पीसीपी, एक्सटेसी, रासायनिक दवाएँ, साइक्लोविन, डी.एम.टी., मेस्कालिन, एमाइल नाईट्राइट आदि औषधियाँ आती हैं।

इसके अतिरिक्त समाज में अत्यधिक प्रचलित नशीले पदार्थ मसलन ताड़ी, वाइन साइडर व पैरी, व्हिस्की, रम, जिन, स्प्रिट, ठर्रा आदि से नशीले पदार्थों के रूप में आधुनिक समाज में युवाओं द्वारा प्रयोग किया जाता है।

दुर्खीम ने विसंगति की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए यह सिद्धान्त प्रतिपादित किया है कि सामाजिक संरचना या समाज का व्यक्ति पर केवल स्वस्थ्य प्रभाव ही नहीं अपितु अस्वस्थ्य प्रभाव का भी प्रभाव पड़ता है और अस्वस्थ्य प्रभाव पड़ने पर व्यक्ति के व्यवहार में विसंगति या नियमहीनता देखने को मिलती है। नशीले पदार्थों के व्यसन से सम्बन्धित अनेकों अध्ययन इस सामान्य धारणा को प्रतिपादित करते है कि अत्यधिक नशीले पारसन्स, जुरगेन

है बरमास, मिशेल फूको आदि कई समाजशास्त्रियों ने अनेकों सामाजिक परिस्थितियों के अनुकूल ऐसी प्रवृत्ति को अभिव्यक्त किया है जो असाधारण व्यवहारों के कारण हैं, आदर्शविहीन व्यवहार सामाजिक संरचना की विसंगति कहलाती है जिसका आधार सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक, आर्थिक अथवा मनोवैज्ञानिक आदि में से एक अथवा एक से अधिक पक्ष हो सकते है। दुर्खीम के उपरोक्त विचारों को रावर्ट के. मर्टन ने और भी विस्तृत तथा स्पष्ट रूप में प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है। आपके अनुसार अभी हाल तक मनोवैज्ञानिक खोज के आधार पर यह विश्वास किया जाता था कि व्यक्तियों में इस प्रकार की प्राणिशास्त्रीय प्रवृत्तियां होती है जो कि पूर्ण सन्तुष्टि की मांग करती है, और इसी कारण वे समय–समय पर सामाजिक आदर्श–नियमों को मानने से इन्कार कर देती है या उन नियमों का उल्लंघन करती है। इस प्रकार पहले यह विश्वास किया जाता था कि सामाजिक संरचना की मांगों को ठुकरा देने की प्रवृत्ति मानव की मूल प्रकृति में ही अन्तर्निहित है। परन्तु सामाजिक विज्ञान में हाल ही में हुई प्रगतियों ने उपरोक्त विचार या सिद्धान्त को बदल दिया है।

आज यह स्वीकार नहीं किया जाता कि सामाजिक प्रतिरोध या नियंत्रण और प्राणिशास्त्रीय प्रवृत्तियों के बीच एक अविराम युद्ध की स्थिति बनी रहती है। प्राणिशास्त्रीय प्रवृत्तियां सभी समाजों के सभी मनुष्यों में बहुत कुछ सामान्य ही होती है तो क्या कारण है कि विभिन्न सामाजिक संरचना के अन्तर्गत समाज–विरोधी या आदर्श विरोधी व्यवहार अलग–अलग प्रकार के होते हैं।

इससे यह स्पष्ट है कि सामाजिक संरचना और इस प्रकार के व्यवहार के बीच कोई अविच्छिन्न सम्बन्ध अवश्य ही है, यद्यपि विषय पर बहुत कुछ जानकारी प्राप्त करनी शेष है कि वे कौन सी प्रक्रियायें है जिनके द्वारा सामाजिक संरचनाएं उन परिस्थितियों को उत्पन्न करती हैं जिनमें सामाजिक संहिताओं का उल्लंघन एक स्वाभाविक अर्थात् प्रत्याशित प्रत्युत्तर हैं। फिर भी मर्टन ने यह दर्शाने का प्रयत्न किया है कि किस भभांति कतिपय सामाजिक संरचनाएं समाज के कुछ लोगों पर इस बात का दबाव डालती है जिसके फलस्वरूप वे अनुकूल नहीं अपितु प्रतिकूल आचरण करते हैं। मर्टन के अनुसार सामाजिक तथा सांस्कृतिक संरचनाओं के विविध तथ्यों में दो आयाम विशेष रूप से पाये जाते हैदृ 1ण सांस्कृतिक लक्ष्य ;ब्नसजनतंस ळ्रवसबजद्धए 2ण प्रवृत्तियाँ ;।जजपजनकमद्ध सांस्कृतिक लक्ष्य, प्रवृत्तियों का प्रतिनिधित्व करते हैं, सांस्कृतिक लक्ष्य की प्राप्ति के लिए प्रवृत्तियों का प्रतिनिधित्व सतत् प्रयत्नशील रहता है जिसे मर्टन ने सांस्कृतिक संकुल ;ब्नसजनतंस ब्वउचसमगद्ध कहा है।[3] सामान्यतः अनेकों समुदायध्समूह ऐसे पाये जाते हैं जिनकी सांस्कृतिक विरासत में नशीले पदार्थ मान्य और प्रचलन में होता है। ऐसे समुदायों की सर्वाधिक संख्या आदिवासी अथवा जंगलों के नजदीक रहने वाले लोगों की है। मर्टन के अनुसार, सांस्कृतिक आधार पर पायी गई प्रवृत्तियाँ विकास में बाधक नहीं होती परन्तु आदतों के रूप में अपनाये जाने के कारण सामाजिक समस्या उत्पन्न होती है।

अध्ययनों का व्याख्यात्मक परीक्षण–

1. प्रो. एवलिन एलिस के अध्ययन से ज्ञात होता है कि नौकरी करने वाली अविवाहित स्त्रियां अक्सर उद्वेगात्मक कठिनाइयों में फंस जाती है जिनका कारण यह है कि नौकरी के क्षेत्र में अपने को सुप्रतिष्ठित करने में वे अपनी सुध–बुध इतनी खो बैठती है कि पारिवारिक सम्बन्ध या विवाह भी उनके लिए आवश्यक हैदृ यह बात उस समय वे स्वीकार नहीं करती हैं। उसी प्रकार अपनी योग्यता और अपनी मेहनत से बने हुए व्यक्ति व्यापार में सफल हो सकते हैं, परन्तु दूसरे कार्यों में, जैसे पिता और पति के कार्यों में, असफल हो सकते हैं। जो गुण

व्यापार के क्षेत्र में उन्हें सफल प्रतिद्वन्द्वी बनाते है वे आवश्यक रूप में अच्छे पिता और पति नहीं बनाते हैं। इस प्रकार के व्यक्तियों के परिवारों में, जैसा कि एलिस और किरबी ने लिखा है, ''मादक पदार्थों का सेवन और विवाह–विच्छेद की घटनाएं अधिक होती है।''

2. ब्रुसेल ने नशीले पदार्थों का सेवन करने वाले एमस्टरडम ने निवासियों पर पांच वर्षीय अध्ययन में यह निष्कर्ष प्रतिपादित किया कि नशीले पदार्थों के सेवन का कारण कोई भी हो परन्तु यह शरीर तन्त्र की व्यवस्था है किन्तु दिन प्रतिदिन के दैआनिक खान–पान, कार्य व्यवहार, सोच–विचार आदि का निरन्तर प्रयोग आदत के रूप में परिवर्तित हो जाता है। नशीले पदार्थों के सेवन करने वाले युवकों के साथ भी यही प्रक्रिया लागू होती है। ब्रूसेल ने एड्स पीड़ितों के साथ नशीले पदार्थों के सेवन से संदर्भित कारणों में मानसिक सन्तुष्टि को प्रमुख कारण माना है। साथ ही साथ यह भी स्पष्ट किया है कि मानसिक सन्तुष्टि का आधार एड्स पीड़ितों के अतिरिक्त नशीले पदार्थ व्यसनियों पर यह सिद्धान्त अक्षरशः लागू न हो।

3. ड्रेजर और ब्रिंक ने अपने शोध अध्ययन में नशीले पदार्थों के व्यसनी व्यक्तियों के व्यवहारों संदर्भित नशीले पदार्थों के कारणों तथा नशीले पदार्थों के लती होने की मात्रात्मक सूची का निर्माण अपने शोध अध्ययन ¸ोमेउमदज व ि सपमि.जपउम चीलेपबंस ंदक ेमगनंस ंइनेम पद जतमंजमक ंसबवीवसपबे रू टंसपकपजल व िजीम ।ककपबजपवद ैमअमतपजल प्दकमगए ।ककपबजपअम ठमींअपवनतेण्श में प्रस्तुत किया है। ड्रेजर और ब्रिंक ने नशे के लती नागरिकों पर उन कारणों का पता लगाने की कोशिश की है जिसके कारण व्यक्ति नशा सेवन प्रारम्भ□ करता हैं इस अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि नशा सेवन का प्रमुख कारण पारिवारिक, पति–पत्नी के मध्य सम्बन्धों की घनिष्ठता अथवा दूसरे अन्य कारणों में प्रमुख है।

ब्रिंक ने आयु वर्ग, सामाजिक स्तर, आय का स्तर आदि आधार पर नशा सेवन करने वालों में मात्रात्मक–तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया है। ब्रिक के अध्ययन में नशा सेवन करने वाले व्यक्तियों को अत्यधिक रूप में प्रभाावित करता है। पश्चिमी देशों में कई ऐसे ठंडे मुल्क है जो प्राकृतिक रूप से व्यक्तियों को नशा सेवन करने के लिए प्रेरित करते हैं सामान्यतः नशा सेवन उतना हानिकारक नहीं है जितना कि नशे की अत्यधिक मात्रा में सेवन कर आदत बना लें।[4]

प्रत्येक देशों की सामाजिक और सांस्कृतिक व्यवस्था अलग–अलग होती है प्रत्येक समूह के सांस्कृतिक मूल्य सामाजिक व्यवस्था के वह आदर्शात्मक पक्ष माने जाते है जिसका उल्लंघन सामाजिक रूप से निन्दनीय होता है परन्तु प्रत्येक समूह की आदर्शात्मक सांस्कृतिक मूल्य मात्र उसके अपने समूह पर लागू होते है बहुत से ऐसे समूह भरे पड़े है, जिनकी सांस्कृतिक विशेषताओं को दूसरे समूह से सर्वश्रेष्ठ मानता है कई ऐसे जनजातीय समूह है जिनकी सांस्कृतिक विशेषताएं अन्य दूसरे समूहों से पूर्णतः भिन्न है ऐसे जनजातीय समूह में नशीले पदार्थों का प्रयोग सांस्कृतिक मूल्यों की दृष्टि से भी उपयुक्त माना गया है उदाहरणदृ □भारत में पायी जाने वाली जनजातियों थारू, भील, नागा आदि अनेकों अफ्रीकी जनजातियों कोकानायड, टोडा, थीलगीरि, हिमगिरि की पहाड़ियों में रहने वाली अनेकों जनजातियों में नशीले पदार्थों का सेवन सांस्कृतिक मूल्यों की दृष्टि से पूर्णतयः स्वीकृत और मान्य है।[5] इस दृष्टि से नशीले पदार्थों का सेवन अनेकों समूहों में सांस्कृतिक दृष्टि से, अनेकों मुल्कों में प्राकृतिक पर्यावरण की दृष्टि से सामाजिक संरचना के व्यवस्थापक पक्ष को प्रभावित नहीं

करता।[6] नशीले पदार्थों का अत्याधिक मात्रा में सेवन जो शारीरिक व्यवस्था को, सामाजिक व्यवस्था को, आर्थिक स्थिति को, पारिवारिक घनिष्ठता को प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से वास्तव में नुकसान पहुंचाता है ऐसी स्थिति के संदर्भ में प्रस्तुत शोध इस खोज की तरफ उन्मुख है।[7] जिसके माध्यम से नशीले पदार्थों का सेवन करने और नवयुवकों की अद्यतन स्थिति ऐसे दुर्व्यसन से पड़ने वाले प्रभाव, दुर्व्यसन को अपनाने का कारण आदि सम्पूर्ण शोध अध्ययन में समाहित है।[8]

अध्ययन उद्देश्यः—

1. नशीले पदार्थ का सेवन करने वाले व्यसनी युवाओं में नशीले पदार्थों की लत पड़ने के कारणों की खोज करना।
2. नशीले पदार्थों के सेवन के लती लोगों की सामाजिक सांस्कृतिक, आर्थिक परिस्थिति को ज्ञान करना।
3. नशीले पदार्थों के सेवन से शारीरिक, मानसिक व पारिवारिक दुष्परिणामों को ज्ञात करना।
4. नशीले—पदार्थों का सेवन करने वाले दुर्व्यसनी लोगों से समाज पर पड़ने वाले प्रभाव की खोज करना।

उपकल्पनाः— प्रस्तुत अध्ययन हेतु निम्न दो उपकल्पनायें सुनिश्चित थी जिनका परीक्षण किया गया है—

1. सन्तुष्टि अथवा असन्तुष्टि के कारण नशीले पदार्थों का प्रयोग धीरे—धीरे युवकों को लती बना देता है।
2. नशीले पदार्थों के लती युवकों का विकास अवरूद्ध हो जाता है।

अध्ययन पद्धतिदृ

प्रस्तुत शोध हेतु अनुसंधान प्ररचना के अन्वेषणात्मक, निरूपणात्मक और निदानात्मक शोध प्रविधि का प्रयोग किया गया है। इस अध्ययन हेतु इकाइयों का चयन निम्न चरणों में किया गया हैदृ

अध्ययन क्षेत्र का चयन : अध्ययन क्षेत्र का चयन मध्य प्रदेश राज्य के रीवा जिले में सर्वाधिक बिक्री वाले पेय नशीले पदार्थों की सूची को प्राप्त कर उसे आरोही क्रम में आरोहित किया गया है।

तदोपरान्त आरोही सूची में से लाटरी विधि द्वारा जनपद का चयन किया गया। इस विधि के माध्यम से जनपद रीवा का चयन निष्पक्ष व निरपेक्ष रूप से प्राप्त हुआ। रीवा की सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, □ौगोलिक व जनसंख्यात्मक पृष्ठ□ूमि को भी दृष्टिगत रखने हुये इकाइयों के चयन की प्रक्रिया या मार्ग प्रशस्त किया गया है।

इकाइयों का चयनः किसी भी अध्ययनकर्ता के लिए प्रतिनिधित्वपूर्ण इकाइयों का चयन किया जाना बेहद कठिन व दुरूह कार्य है। अध्ययन की सार्थकता और सत्यता प्रतिनिधित्वपूर्ण इकाइयों के चयन पर निर्भर करती है। शोध पत्र की अध्ययन प्रकृति स्वतः इस प्रवृत्ति की है कि नशीले पदार्थों के सेवन करने वाले व्यक्तियों की सूची उपलब्ध होना सम्भव नहीं थी। सरकारध्राज्य सरकार, पुलिस व स्वयंसेवी संगठनों द्वारा भी ऐसी सूची का प्रकाशन नहीं किया गया है इसलिए नशीले पदार्थों का सेवन करने वाले व्यक्तियों की खोज समाजशास्त्रीय पद्धति से किया गया है, इस पद्धति में किसी एक नशीलें पदार्थों के व्यसनी द्वारा दूसरे व्यसनी का पता लगाना अधिक उपयुक्त और सरल रहा है।[9]

शोध हेतु एकत्रित किये गये तथ्यों का विवेचन, अध्ययन के क्रमबद्ध खण्डों में वि□जित व प्रस्तुत किया गया है। प्राप्त तथ्यों का क्रमबद्ध विश्लेषण निम्नलिखित है—

वैवाहिक सम्बन्धों की सुदृढ़ता अथवा दूरी नशे की लत को प्रभावित करती है। सर्वाधिक संख्या 46ण60 वैवाहिक सम्बन्धों में दूरी महसूस करने वाले उत्तरदाताओं की है। इनके वैवाहिक सम्बन्धों को तथा आर्थिक कारण 19.23 प्रतिशत प्रभावित कारकों की हैं तथा 41ण02 प्रतिशत दूरी की संख्या 51ण28 प्रतिशत उत्तरदाताओं में असंतुष्ट यौन सम्बन्धों के कारण नशे की लत को बढ़ावा मिला है।

समग्र इकाईयों में सर्वाधिक 68ण66 प्रतिशत विवाहित युवकों की है तथा सबसे कम 04 प्रतिशत तलाकशुदा लोगों की है। इन इकाइयों में 52ण66 प्रतिशत जातीय आधार पर विवाहित हुये है तथा इनकी विवाह के समय आयु सर्वाधिक 43ण66 प्रतिशत 20 से 24 वर्ष के आयु वर्ग के युवकों की है।

नशीले पदार्थों का प्रयोग करने के लिए प्रेरित करने वाले परिवेश में सर्वाधिक संख्या 52 प्रतिशत मित्रों की तथा 14प्रतिशत सहपाठी, 22ण66 पड़ोसी की हैं, एवं सबसे कम संख्या स्वयं की जिज्ञासावश है। नशा सेवन की प्रवृत्ति को अपनाने और उसे बनाये रखने के कारणों में यौन संतुष्टि का कारण सर्वाधिक 38 प्रतिशत उत्तरदाताओं में और 22ण66 प्रतिशत आनन्द प्राप्ति की स्वीकृति वाले उत्तरदाताओं की है जबकि उत्तरदाताओं ने निःसंकोच यह स्वीकार किया कि नशीले पदार्थों के प्रयोग के कारणों से उनमें सर्वाधिक कारण आर्थिक कलह का कारण 29ण33 प्रतिशत पाया गया साथ ही साथ 36 प्रतिशत (सर्वाधिक संख्या) पारिवारिक कलह को प्रमुख माना गया है।

अन्य प्रमुख कारणों में 12ण66 प्रतिशत यौन अंसतुष्टि का कारण माना गया, परिवार में निम्न स्थान होना 4प्रतिशत, शारीरिक दुर्बलता 2 प्रतिशत, स्वतंत्रता तथा अभिव्यक्ति में कमी 2.66 प्रतिशत आदि कारक नशा सेवन के कारकों के आधार पाये गये है।

इन प्रमुख कारकों के साथ–साथ उत्तरदाता युवकों में उपलब्धियों की खुशी के कारण 23.33 प्रतिशत, अध्ययन में प्रगति लाने हेतु मनोरंजन की दृष्टि से 9.33 प्रतिशत, शौकिया 3 प्रतिशत, दुखध्गम को □लाने का कारण 24.66प्रतिशत आदि ऐसे तथ्य भी सामने उ□रकर आये है जिसके कारण युवाओं द्वारा नशीले पदार्थों का प्रयोग किया गया, धीरे–धीरे उनके क्रम में वृद्धि आयी और वे नशे की प्रवृत्ति की ओर उन्मुख हुए। अपने से अधिक सामाजिक पद और स्तर वाले व्यक्ति को देखकर नषा सेवन की प्रवृत्ति की तरफ उन्मुख होते हुए संस्कृतिकरण की प्रक्रिया के मार्ग को प्रशस्त करने वाले उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया, जिसमें 48 प्रतिशत मित्रों से 16.66 प्रतिशत एक दूसरे को देखकर नशा सेवन प्रारम्भभ किया और नशे की प्रवृत्ति की तरफ बढ़े। उत्तरदाताओं का यह भी मानना है कि कुसंगति के कारण जिनमें 16ण66 प्रतिशत मित्र मण्डली, 7.33 प्रतिशत पड़ोसी, 48 प्रतिशत स्वयं से (विचलित मानसिकता) भी उनमें नशा सेवन की प्रवृत्ति बढ़ी है।

नशा सेवन की लत से पीड़ित 59.33 प्रतिशत सभी मौसम में नशा सेवन समान मात्रा में ग्रहण करते है जबकि सर्दी में 20.66 प्रतिशत, गर्मी में 6.66 प्रतिशत, बरसात में 13.33 प्रतिशत युवक नशा सेवन की चाहत व मात्रात्मक भिन्नता में नशा सेवन करते हैं। युवक सामान्यतः नशे की दुकानों से नशीले पदार्थों की खरीद करते है परन्तु 40प्रतिशत उत्तरदाता युवक नशे के लिए किसी भी साधन से पदार्थ प्राप्त करना स्वीकारते हैं। दैनिक व्यय की दृष्टि से रू. 300 या उससे अधिक नशीले पदार्थों की खरीद पर व्यय करने वाले युवकों की संख्या सर्वाधिक 31.33 प्रतिशत तक की, 28 प्रतिशत युवा रू. 25 तक, 20 प्रतिशत युवा रु. 50 13.33 प्रतिशत युवा रु. 75 तथा 4ण66 प्रतिशत युवा रू. 100 तक प्रतिदिन व्यय नशीले पदार्थों के सेवन पर करते है।

नशीले पदार्थों के सेवन के लिए प्रयोग में युवक सर्वाधिक 46 प्रतिशत कागजध्पन्नी पर रखकर खाने की प्रविधि का प्रयोग करते है इसके अतिरिक्त सिगरेट की तम्बाकू में मिलाकर 34.66 प्रतिशत, इन्जेक्शन द्वारा 17.33 प्रतिशत युवा उत्तरदाता नशीले पदार्थ के सेवन का प्रयोग करते है।

नशा सेवन का समयान्तराल सर्वाधिक 48.66 प्रतिशत प्रतिदिन (शाम को), 26ण66 प्रतिशत प्रतिदिन रात और दोनों समय जबकि 24.66 प्रतिशत उत्तरदाता एक बार नशा करने के बाद पुनः दुबारा नशा करने के लिए जब भी साधन उपलब्ध हो उसके अनुरूप नशे का सेवन करते हैं। नशा सेवन से सर्वाधिक 77.33 प्रतिशत नकारात्मक प्रभाव (युवा) महसूस करते है जबकि 8ण66 प्रतिशत सकारात्मक व 14 प्रतिशत को स्पष्ट नहीं (मालूम नहीं) हो सका है। रोगग्रस्तता की स्थिति में सुस्ती 32.66 प्रतिशथ, पेट रोग 21ण33 प्रतिशत, यौन सम्बन्धी रोग 20.66 प्रतिशत जोड़ों में दर्द 8 प्रतिशत व बुखार 3ण33 प्रतिशत युवकों में पाये जाने का तथ्य दृ ष्टिगोचित हुआ है।

युवकों का नशे का लती होने के प्रति पारिवारिक प्रतिक्रिया सर्वाधिक 69ण33 प्रतिशत उपेक्षापूर्ण रही है जबकि 21.33 प्रतिशत परिवार तटस्थ व 4 प्रतिशत परिवार सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार व आचरण करते रहे है। इसका कारण यह है कि उत्तरदाता के परिवार के लोग युवाओं में नशे की आदत से मुक्ति दिलाने हेतु सहानु□तिपूर्ण व्यवहार करते है। नशे के लगातार प्रयोग के कारण युवकों में सामाजिक पद व प्रतिष्ठा की दृ ष्टि से 67 प्रतिशत युवकों के समान में गिरावट पायी गयी है जबकि 33 प्रतिशत चारित्रिक गिरावट भी देखने को मिली है।

निष्कर्ष : प्रस्तुत शोध पत्र हेतु एकत्रित तथ्यों के विश्लेषण से निम्न निष्कर्षों का प्रतिपादन होता है 30 वर्षों से अधिक आयु–वर्ग के युवकों में नशे के लती होने की प्रवृत्ति अधिक मिली। उनमें शिक्षा–अशिक्षा का प्रभाव कम अपितु सामाजिक परिवेश अधिक महत्वपूर्ण दृष्टिगोचित होता है। नशे की लत हिन्दू, विशेषकर अनुसूचित जनजाति के कारवाई नवयुवकों में अधिक पायी गयी। रोजगार युवाओं की अपेक्षा बेरोजगारों में नशे की लत की अधिक संख्या पायी गयी। आय का नशे की लत पड़ने में कोई □भूमिका नहीं रही हैं, सभी आय वर्ग के ऐसे युवक जिनमें मानसिक, शारीरिक के साथ इच्छा–शक्ति की कमी एवं एकाकी प्रवृत्ति में भी नशे की लत की प्रवृत्ति को प्रभावित किया है।

समाजशास्त्रीय तथ्यों के अध्ययन के विश्लेषण के आधार पर ज्ञात हुआ है कि युवाओं में नशे की लत का कारण उनके पारिवारिक, वैवाहिक सम्बन्धों में दूरी उत्पन्न हुई। वैवाहिक सम्बन्धों में दूरी का कारण पति–पत्नी के मध्य यौन–सम्बन्धों में असन्तुष्ट और नशे की लत का सह–सम्बन्ध देखने को मिला। उत्तरदाताओं की मासिक बजट की स्थिति के अन्तर्गत संयुक्त परिवारों में सामान्य, जबकि एकाकी परिवार में घाटे की स्थिति पायी गयी।

प्राप्त तथ्य यह प्रदर्शित करते हैं कि विवाहित जीवन के पश्चात् उनमें नशे की लत पड़ी, जबकि ज्यादातर उत्तरदाताओं के विवाह चयन की प्रकृति अपनी ही जाति में और परम्परागत आधार पर ही हुए हैं और विवाह भी अपने परिवार के मुखिया के निर्णय पर रहा है। इनके विवाह के समय आयु–वर्ग भी 20.24 वर्ष रहा, इसलिए इनमें विवाह चयन की प्रकृति और नशे के आदती होने की प्रकृति में कोई सह–सम्बन्ध स्पष्ट नहीं हुआ और न ही दोनों प एक दूसरे को प्र□वित करते हैं, बल्कि ऐसे युवक विसंगति योग्यता की दृष्टि से ताकिक, निर्णय की दृष्टि से योग्य निर्णय लेने वाले व्यक्ति भी नशे के आदती युवकों की श्रेणी में पाये गये।

सर्वाधिक युवकों ने नौकरी में आने के बाद नशा सेवन प्रारम्भ□किया, एवं नशे की लत के लिए युवक बीड़ी, सिगरेट, गुटखा, शराब, आदि पदार्थों का सर्वाधिक प्रयोग करते पाये गये। अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष

में यह पाया गया कि नशे की लती उत्तरदाता युवक तीन वर्ष से अधिक समय में लगातार नशे का प्रयोग लत के रूप में कर रहे और इनकी लत में बढ़ोत्तरी पायी गयी।

सर्वाधिक युवक मित्र और सहपाठी से प्रेरित होकर नशे की शुरूआत करते हैं, इसकी शुरूआत युवा आनन्द की प्राप्ति के उद्देश्य से करते हैं, एवं अधिकांश युवकों में नशे का सेवन काम–वासना की प्राप्ति (संतुष्टि हेतु) करते हैं, तथा जिन युवकों के पालन–पोषण में लापरवाही देखी गयी उन युवकों में नशे की आदत का प्रमुख कारण पारिवारिक कारक पाया गया वही दूसरी तरफ कुछ युवकों में सामाजिक उपेक्षा और सामाजिक छूट के कारण भी नशे की लत पायी गयी अर्थात् पारिवारिक कलह और आर्थिक अभाव ऐसे प्रमुख कारक है जिसके कारण सर्वाधिक युवाओं को नशे के सेवन की तरफ उन्मुख होना पड़ा।

संस्कृतिकरण की प्रक्रिया से भी युवकों में नशे की प्रवृत्ति बढ़ी। सामाजिक स्तर के बड़े ओहदे सम्मान की प्रतिष्ठा में नशे का सेवन करने वाले उत्तरदाताओं में अधिकांश उच्च आर्थिक स्थिति वाले उत्तरदाता है अर्थात् सन्तुष्टि और असन्तुष्टि भी वह प्रमुख कारण है जिसके कारण युवाओं में नशीले पदार्थों के सेवन की लत पड़ी है।

नशा सेवन करने वाले अधिकांश युवकों का स्वयं का मानना है कि कुसंगति के कारण उनमें नशे की लत पड़ी है। अध्ययन द्वारा यह निष्कर्ष प्रापत हुआ है कि अधिकांश युवा अपनी लत को पूरा करने के लिए सही गलत सभी प्रकार के साधनों से नशीले पदार्थों की खरीद पर प्रतिदिन 300 रु. तक व्यय करते है। युवा नशे का सेवन नशीले पदार्थों को मिलाकर, इन्जेक्शन आदि विधियों के माध्यम से करते है। समय अन्तराल की दृष्टि से तथ्य सामने आये कि युवक प्रतिदिन शाम को नशा सेवन करते है एवं कुछ उत्तरदाता युवक समय की उपयुक्तता अथवा अनुपयुक्तता से विमुख होकर जब भी नशीला पदार्थ उन्हें उपलब्ध हो जाता वे उसका सेवन करते है।

अधिकांश युवकों ने स्वीकार किया है कि नशे के सेवन की लत से उनकी कार्य क्षमता पर नकारात्मक प्रभाव आये हैं एवं अपनी इस लत के कारण उन्हें सुस्ती पेट रोग, जोड़ों में दर्द, बुखार आदि अन्य स्वाभाविक लण उभर रहे हैं। शारीरिक समस्याओं के साथ उन्हें अपनी नशे की प्रवृत्ति के कारण अपने ही परिवार के लोगों से उपेक्षापूर्ण व्यवहार का सामना करना पड़ा रहा है और समाज में भी उनमें चारित्रिक गिरावट एवं पद प्रतिष्ठा व मान–सम्मान में गिरावट आयी है।

प्राप्त तथ्यों के विश्लेषण से यह निष्कर्ष भी प्रतिपादित हुआ है आयु–वर्ग के वर्गीकरण के आधार पर ऐसे युवकों में नशे की प्रवृत्ति अधिक पायी गयी जिनकी उम्र 30 वर्ष से अधिक है। शैइक स्तरकी दृष्टि से अधिकांशतः युवकों में नशे की लत स्कूलध्कालेज स्तरीय शिक्षा के परिवेश में आने के कारण लगी। लती उत्तरदाताओं में उनके आय के वर्गीकरण के आधार पर या तो सर्वाधिक आय वाले उत्तरदाताओं में नशे की प्रवृत्ति अधिक पायी गयी अथवा सबसे कम आय वाले उत्तरदाताओं में।

निष्कर्षः कम आय वाले उत्तरदाता गरीबी और आर्थिक समस्या से जूझने के कारण और अधिक आय वाले युवाओं में अन्य कारणों से नशे की लत पायी गयी। अर्थात् नशे की प्रवृत्ति का कारण जितना आर्थिक है उतना ही सामाजिक कारण भी जिम्मेदार हैं उत्तरदाताओं में नशे की लत पर मौसम का प्रभाव नहीं पड़ता जबकि मात्रा की दृष्टि से मौसम का युवकों को प्रभावित करता है।

शोध पत्र में तथ्यों के समाजशास्त्रीय विश्लेषण एवं समंकों के साक्षात्कार से प्राप्त तथ्य निम्नांकित सामान्य विशेषताओं को स्पष्ट करते है जिसके आधार पर समाजशास्त्रीय सामान्यीकरणधनिष्कर्ष प्रतिपादित होते हैं। □भारतवर्ष में सर्वाधिक नशीले पदार्थों के सेवन करने वाले लोगों की संख्या 30 वर्ष से आयु के लोगों की

है। इससे यह स्पष्ट होता है कि 30 वर्ष से कम आयु के युवा जीवन के वास्तविक एत्र में प्रथमतः रोजगार अथवा जीविका के साधन की तलाश करते हैं, जीविकोपार्जन के संसाधनों की उपलब्धता हेतु ही वह नशे जैसी प्रवृत्ति की ओर उन्मुख हो जाते हैं जिसके कारण धीरे–धीरे वह नशे के लती हो जाती हैं। सामान्यतः नशे के लती ऐसे युवकों की संख्या सर्वाधिक है। जो सामान्य परिवार से जुड़े रहे हैं, अथवा उस परिवार की शिआ सामान्य अथवा निम्न रही हो। इससे यह निष्कर्ष प्रतिपादित पायी जाती है। पारिवारिक संरचना भी नशे की प्रवृत्ति का कारण रही है। प्राप्त तथ्यों से स्पष्ट होता है कि संयुक्त परिवार की अपेक्षा एकाकी परिवार के लोगों में नशे की प्रवृत्ति अधिक पायी गई है। इससे यह निष्कर्ष प्रतिपादित होता है कि पारिवारिक संरचना भी नशे की प्रवृत्ति का महत्वपूर्ण कारक है। शिक्षा का स्तर अथवा सामाजिक जागरूकता भी नशे की प्रवृत्ति का प्रमुख कारण रही है। समंकों के संकलन के मध्य प्राप्त तथ्यों को विश्लेषण ऐसे सामान्य निष्कर्षों को प्रतिपादित करता है जो यह स्पष्ट करते हैं कि सामाजिक जागरूकता, उत्तरदायित्व की भभावना के अनुभूति, शैक्षिक योग्यता, मानव प्राणी को किसी भी कार्य अथवा भूमिका को सम्पादित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। प्राप्त तथ्य यह निष्कर्ष प्रतिपादित करते हैं कि शिक्षित और जागरूक नागरिकों की अपेक्षा अशिक्षित गैर जिम्मेदार लोगों में नशे की प्रवृत्ति अधिक पायी गई अर्थात् सामाजिक प्रस्थिति भी नशे की प्रवृत्ति को प्रभावित करती है। उच्च प्रस्थिति की जगह निम्न प्रस्थिति वाले लोगों में नशे की प्रवृत्ति अधिक पाया जाना यह स्पष्ट करता है कि समाज में निम्न प्रस्थिति, अशिक्षा, सामाजिक संरचना आदि नशे की प्रवृत्ति के प्रमुख कारण है।

सुझाव : युवकों के व्यक्तित्व निर्माण में जहाँ एक तरफ विकसित देश अनेकों आयोजनों, नियोजनों का निर्माण करते हैं वहीं भारत जैसे देश में नशा सेवन की लत से युवकों को बचाने के लिए न तो कोई कठोर नियमध्कानून बनाये गये हैं और न ही सकारात्मक पहल की गयी हैं। प्राप्त निष्कर्षों की विवेचना के साथ ही नशे की समस्या से मुक्तिं दिलाने के लिए कुछ योजनायें नीतियों एवं सुझावों को भी बताना आवश्यक होगा और भारत सरकार के लिए आवश्यक है कि अपनी युवा पीढ़ी एवं भीवी पीढ़ियों को बचाने के लिए नशे के खिलाफ कठोर नियम और कानून बनाये एवं उसे सकारात्मक रूप से लागू करने के कठोर कदम उठाये भले ही इससे भारत और राज्य सरकारों को राजस्व का घाटा हो। अगर ऐसा ठोस कदम उठा सकते हैं तो निश्चित ही युवा वर्ग को नशे की तरफ जाने से रोक सकेंगे।

भारत सरकार के द्वारा नशे के खिलाफ उठाये जाने वाले आवश्यक कदम–

अभी तक किये गये अनेकों शोध अध्ययनों, सर्वेणों, रिपोर्टों का न केवल अवलोकन व मूल्यांकन करवाकर निश्चित मार्गदर्शक नियमों व व्यवस्याओं का निर्माण करें बल्कि केन्द्रीय आयोग बनाकर युवकों को सकारात्मक राह पर चलने को प्रेरित करें।

नशा सेवन से होने वाली हानियों का भी ठीक उसी प्रकार सिनेमा, टी.वी. अखबार आदि के माध्यम से प्रचार–प्रसार किया जाना चाहिये जिस तरह इनकी बिक्री के लिए ग्राहकों को लुभावने वाले विज्ञापन तैयार किये जाते हैं रोल मॉडल या स्टार प्रचारकों द्वारा तथा इसकी बिक्री पर रोक लगाना अनिवार्य किया जाना चाहिए।

नशा सेवन की हानियों संदर्भित रिपोर्ट, अध्ययनों का प्रकाशन प्रमुखता से किया जाना अनिवार्य व अपरिहार्य है।

नशीले पदार्थों का उत्पादित वस्तुओं पर एक कोने में चेतावनी न देकर उस बड़े–बड़े अर में पूरे कवर पर छापा जाये। ऐसा न करने पर उत्पादन पर कड़ाई से प्रतिबन्धित भी किया जाये।

हानिरहित नींद की गोली और हानिरहित सिगरेट का उत्पादन किया जाना चाहिए।

चूंकि इण्डटरमीडिएट स्तरीय शिक्षा वाले युवाओं में नशा सेवन प्रारम्भ की जानकारी मिली। इसे ध्यान में रखते हुए का आठ के पाठ्यक्रम में नशा और नशे से सम्बन्धित समस्याओं को रखें।

शिक्षकों पर कालेज कैम्पस में किसी भी प्रकाश का नशा करने पर पाबन्दी लगाई जायें।

अभिभावकों को अपने बच्चों से मित्रतापूर्ण व्यवहार करते हुए नशाध्सेवन की हानियों से अवगत कराना चाहिए।

फिल्मोंध्सीरियल, में नशा सेवन के चित्रध्सीन दिखाये जाने पर रोक लगानी चाहिए।

राज्य सरकारों द्वारा नशा अवमुक्ति पर विशेष ध्यान दिये जाते हुए सप्ताह का दिन निश्चित करके हर रविवार नशा बिक्री व उपयोग पर रोक के नियम बनाये।

नशे की लत से पीड़ित युवकों को उपेक्षा से नहीं सहानुभूति पूर्व व्यवहार किया जाना आवश्यक है।

युवकों को नशे से बचाने हेतु जिला, तहसील, ब्लाक एवं गाँव स्तर पर निःशुल्क सुधारगृह स्थापित किये जाने चाहिए तथा सरकारी कर्मचारियों को ट्रेनिंग देकर प्रारम्भिक स्तर पर युवकों को पहचानकर, उन्हें नशे से सम्बन्धित अवगुणों को लेकर काउन्सिलिंग करें और उन्हें जागरूक करें।

स्वास्थ्य शिविर लगाकर युवकों को नशे से मुक्ति दिलाने वाले मेडिटेशन का प्रशिण दिया जाए।

नशे की लत को धीरे–धीरे करके छोड़ने के बजाय एक ही बार में निर्णय करके छोड़ने को प्रेरित करें।

अन्त में आवश्यक एवं नवीन सोच, युवकों को देश की धरोहर मानकर उनकी सुरक्षा एवं उचित मार्गदर्शन दिये जाने का मार्ग प्रशस्त की ओर केन्द्र सरकार एक नशामुक्त भारत के उद्देश्य से एक आयोग का गठन करें और उसके सदस्यों में टी.बी.धसिनेमा कलाकार, खिलाड़ी, वैज्ञानिक, मनोवैज्ञानिक, समाजशास्त्री, बुद्धिजीवी, वर्ग समाज सुधारक एवं अच्छा कार्य करने वाली संस्था के लोगों को शामिल किया जायें एवं हर युवा वर्ग का आकर्षण केन्द्र फेसबुक, टिवटर, ब्लाग, व्हाटसैप आदि के माध्यम से राष्ट्रीय स्तर तक एक चेन बनाकर, एक–दूसरे को जुड़ने के लिए आमन्त्रित करें। उन्हें भी सदस्य बनायें और अन्य को जुड़ने को प्रेरित करें इस आयोग द्वारा गठित सदस्यों का एवं एक चेन के माध्यम से जुड़ने वाले प्रत्येक सदस्य का कार्य नशे के दुष्परिणामों की सही जानकारी देकर उसके दुष्परिणामों को नशे के पीड़ित लोगों से अवगत कराकर लघु फिल्म बनाकर व इस दिशा में अच्छा कार्य करने वाली संस्था को पुरस्कृत व सम्मानित करके भारत के एक–एक व्यक्ति तक व्यक्तिगत तौर पर सन्देश पहुँचाना हैं एवं भारत को पूर्ण नशा मुक्त भारत बनाना है। जब युवा स्वयं नशे के विरोध में इस अभियान से शामिल हो जायेंगे तो इससे कौन प्रेरित नहीं होगा। यह बहुत ही सार्थक प्रयास हैं, इन प्रयासों के माध्यम से हर युवा शक्ति नशा मुक्त अभियान से जुड़ने के लिए प्रेरित होगें।

सन्दर्भ

1. Nair, P.S. (1989), Indian Youth – A Profile, New Delhi, Mittal Publications.
2. Chaubey, Madhuri (1995), Status of Deprived Tribal Youth, Shiva Publications, Udaipur.
3. Gandhi, P.K. (1963), ``Rural Youth in Urban India", Seema Publications, pp. 256.
4. Garg, Pulin, K. (1976) Profiles in Identity : A Study of Indian Youth at Crossroads of Culture, New Delhi, Vision Books, p. 292.
5. Jayaswal, R. (1992), ``Modernization and Youth in India", Rawat Publications, Jaipur, P. 203.

6. Kalra, R.M. (1987), ``Curriculum Construction for Youth Development", Sterling Publishers, New Delhi.
7. Karanath, G.K. (1981), Rural Youth : A Sociological Study of a Karnataka Village", New Delhi.
8. Raghuvanshi, M.S. (1984), Modernising Rural Youth : On the Role of Formal Education, Ajanta Publications, New Delhi.
9. चौबे, राजेन्द्र कुमार ;2005द्धए छात्रों में नशे की प्रवृत्ति : कारण एवं निदान, अर्जुन पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली।